International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(I), April- June, 2026, pp. 126-129

राजस्थान के सामाजिक जीवन में गज चित्रण

सोहन लाल बलाई[1*] | डॉ. श्रीकृष्ण यादव[2]

[1]शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]सह आचार्य, चित्रकला विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: slbarala@gmail.com

Citation: बलाई, सोहन एवं यादव, श्रीकृष्ण (2026). राजस्थान के सामाजिक जीवन में गज चित्रण. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(I)), 126–129.

सार

चित्रण की प्रवृति मनुष्य में आदिकाल से चली आ रही है।1 राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराएँ, लोकजीवन, स्थापत्य कला, चित्रकला तथा सामाजिक मान्यताएं अत्यन्त समृद्ध एवं विशिष्ट हैं। राजस्थान की कला में प्रकृति, पशु–पक्षी, धार्मिक आस्थाएं और राजसी सामाजिक जीवन का अत्यन्त सुंदर एवं जीवन्त चित्रण मिलता है। इन्हीं कलात्मक अभिव्यक्तियों में "गज चित्रण" का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

शब्दकोशः *समृद्ध, शौर्य, राजसी, प्रतीक, विजय जुलूस, सांस्कृतिक वैभव।*

प्रस्तावना

गज अर्थात हाथी भारतीय संस्कृति में शक्ति, समृद्धि, शौर्य और राजसी गरिमा का प्रतीक माना गया है। राजस्थान के सामाजिक जीवन में हाथी केवल यातायात या युद्ध का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा, धार्मिक आस्था तथा सांस्कृतिक वैभव का प्रतिनिधि भी था। राजाओं की सवारी, युद्ध, विवाह–समारोह, विजय जुलूस तथा धार्मिक यात्राओं में हाथियों का उपयोग विशेष रूप से किया जाता था। यही कारण है कि राजस्थानी चित्रकला एवं लोककला में गज का व्यापक चित्रण मिलता है।

राजस्थानी चित्रकारों ने हाथियों को अत्यंत कलात्मकता, रंग संयोजन और अलंकरणों के साथ चित्रित किया। विभिन्न चित्रशैलियों मेवाड़, मारवाड़, हाडौती तथा ढूंढ़ाड शैली में हाथियों का चित्रण सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का सजीव दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

यह शोध–पत्र राजस्थानी सामाजिक जीवन में गज चित्रण की परंपरा, उसके सांस्कृतिक महत्व, धार्मिक प्रतीकों, चित्रकला में उसकी भूमिका तथा आधुनिक संदर्भों का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

गज का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व

भारतीय संस्कृति में हाथी को अत्यंत शुभ माना गया है। प्राचीन ग्रंथों, पुराणों और धार्मिक कथाओं में गज का उल्लेख बार–बार मिलता है। हिंदू धर्म में भगवान गणेश का स्वरूप गजमुख है, जिन्हें बुद्धि, ज्ञान और मंगल का देवता माना जाता है। राजस्थान में भी गणेश पूजा प्रत्येक शुभ कार्य से पहले की जाती है, जिससे गज का धार्मिक महत्व स्पष्ट होता है।

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

राजस्थान के मंदिरों, किलों और हवेलियों में हाथियों की आकृतियाँ शुभता एवं सुरक्षा के प्रतीक के रूप में अंकित की जाती थीं। द्वारों पर हाथियों के चित्र बनाना समृद्धि और वैभव का प्रतीक माना जाता था।

लोकविश्वास के अनुसार हाथी शक्ति और स्थिरता का प्रतीक है। इसलिए विवाह, धार्मिक यात्रा और उत्सवों में हाथियों का प्रयोग शुभ माना जाता था। कई स्थानों पर हाथी की प्रतिमा को लक्ष्मी प्राप्ति का प्रतीक भी माना जाता है।

राजस्थान की लोक परंपराओं में हाथी का संबंध वर्षा और समृद्धि से भी जोड़ा गया है। लोकगीतों और लोककथाओं में हाथी को राजसी गौरव और शक्ति का प्रतिनिधि माना गया है।

राजस्थानी चित्रकला में गज चित्रण

वर्तमान काल में चित्रकला के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई है।[2] राजस्थानी चित्रकला भारतीय लघुचित्र परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। इसमें धार्मिक कथाओं, युद्ध, प्रेम, प्रकृति तथा राजदरबार के दृश्य प्रमुख रूप से चित्रित किए गए। हाथियों का चित्रण इन सभी विषयों में अत्यंत प्रभावशाली रूप में मिलता है।

राजस्थानी चित्रकारों ने हाथियों को केवल प्राकृतिक रूप में ही नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप में भी प्रस्तुत किया। हाथी राजसी शक्ति, वीरता, सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बनकर चित्रों में दिखाई देता है।

मेवाड़ शैली में गज चित्रण

मेवाड़ शैली राजस्थानी चित्रकला की प्राचीन एवं प्रमुख शैली मानी जाती है। इस शैली में युद्ध और वीरता के दृश्य अधिक चित्रित किए गए हैं। हाथियों का उपयोग युद्धों में विशेष रूप से होता था, इसलिए मेवाड़ शैली में हाथियों को युद्धभूमि में सुसज्जित रूप में दर्शाया गया।

इन चित्रों में हाथियों के शरीर पर सुंदर अलंकरण, रंगीन वस्त्र तथा स्वर्णाभूषण बनाए गए हैं। कलाकारों ने हाथियों की शक्ति और गति को प्रभावशाली रेखाओं के माध्यम से व्यक्त किया। मेवाड़ शैली के चित्रों में राजा हाथी पर सवार होकर युद्ध करते अथवा विजय जुलूस निकालते दिखाई देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हाथी राजसी जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा था।

मारवाड़ शैली में गज चित्रण

मारवाड़ शैली अपनी कोमलता, सौंदर्य और भावनात्मक चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली में हाथियों को राजदरबार, विवाह–समारोह और उत्सवों में चित्रित किया गया। मारवाड़ क्षैत्र के चित्रों में हाथियों के अलंकरण अत्यंत आकर्षक होते हैं। उनके शरीर पर रंगीन वस्त्र, जरीदार आभूषण और सुंदर सजावट दिखाई देती है। इस शैली में हाथियों का चित्रण सौंदर्य और शांति का प्रतीक प्रतीत होता है। कलाकारों ने हाथियों को अत्यंत संतुलित एवं आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया।

हाड़ौती शैली में गज चित्रण

कोटा शैली व बूंदी शैली अपनी प्राकृतिक सुंदरता और जीवंत चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। बूंदी चित्रों में वर्षा, वन, पशु–पक्षी तथा राजसी जीवन का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इस शैली में हाथियों को अत्यंत गतिशील रूप में चित्रित किया गया है। हाथियों की चाल, उनकी सूंड की गति तथा शरीर की संरचना को कलाकारों ने बड़ी सूक्ष्मता से दर्शाया है।

बूंदी शैली के चित्रों में हाथी केवल राजसी प्रतीक नहीं बल्कि प्रकृति का अभिन्न अंग भी दिखाई देता है। कई चित्रों में हाथियों को जलक्रीड़ा करते हुए या जंगलों में विचरण करते हुए दर्शाया गया है।

ढूंढ़ाड शैली में गज चित्रण

जयपुर, आमेर शैली मुगल शैली के प्रभाव से प्रभावित रही है। इसमें राजसी जीवन, दरबारी संस्कृति तथा शाही समारोहों का विस्तृत चित्रण मिलता है। जयपुर शैली में हाथियों को विशेष रूप से शाही जुलूसों और धार्मिक आयोजनों में दर्शाया गया है। हाथियों के शरीर पर बने अलंकरण, स्वर्ण सजावट और रंगीन छतरियाँ राजसी वैभव को प्रदर्शित करती हैं। जयपुर के चित्रों में हाथी सामाजिक प्रतिष्ठा और शाही शक्ति का प्रतीक बनकर उभरता है।

सामाजिक जीवन में गज की भूमिका

राजस्थान के सामाजिक जीवन में हाथियों का महत्व अत्यन्त व्यापक था। यह केवल पशु नहीं बल्कि सामाजिक संरचना और राजकीय परंपराओं का महत्वपूर्ण अंग था।

राजसी वैभव और शक्ति का प्रतीक

राजपूत शासकों के लिए हाथी शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रतीक था। राजा एवं सामंत हाथियों का उपयोग युद्ध, शिकार और सार्वजनिक समारोहों में करते थे। राजदरबारों में हाथियों की संख्या राजा की समृद्धि और सैन्य शक्ति का प्रतीक मानी जाती थी। हाथियों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता था और उन्हें अत्यंत सुसज्जित रखा जाता था।

युद्धों में हाथियों का महत्व

प्राचीन और मध्यकालीन युद्धों में हाथियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। हाथियों का उपयोग शत्रु सेना को भयभीत करने और युद्ध में आक्रमण करने हेतु किया जाता था। राजस्थानी चित्रों में युद्धरत हाथियों के दृश्य अत्यंत प्रभावशाली दिखाई देते हैं। हाथियों पर बैठे सैनिक तथा युद्ध उपकरण उस समय की सैन्य व्यवस्था को दर्शाते हैं। हाथियों की लड़ाई[2] व क्रीड़ाओं के दृश्य भी चित्रित किये गये है।[3]

विवाह और उत्सवों में गज

राजस्थान की विवाह परंपराओं में हाथी शुभता और सम्मान का प्रतीक था। पुराने समय में दूल्हा हाथी पर सवार होकर बारात लेकर जाता था। त्योहारों और मेलों में भी हाथियों को रंग–बिरंगे वस्त्रों और चित्रकारी से सजाया जाता था। जयपुर का हाथी उत्सव आज भी इस परंपरा का जीवंत उदाहरण है।

हाथियों की लड़ाई, बून्दी शैली

लोककला और हस्तशिल्प में गज चित्रण

लोकचित्रकला के जितने भी विविध स्वरूप मिलते हैं वे सबके सब किसी न किसी धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों की आस्था, विश्वास और जीवनपद्धति से जुड़े हुए हैं।[5] राजस्थान की लोककला में हाथियों का चित्रण अत्यंत लोकप्रिय है। फड़ चित्रकला, पिचवाई, वस्त्र छपाई, मिट्टी कला, सांझी कला तथा कठपुतली कला में हाथियों का व्यापक उपयोग मिलता है। सांगानेरी और बगरू प्रिंटों में हाथियों की आकृतियाँ सजावटी रूप में बनाई जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ मांडना कला[6] में भी हाथियों की आकृतियाँ बनाती हैं। हाथी की आकृति को समृद्धि और मंगल का प्रतीक मानकर घरों की दीवारों पर चित्रित किया जाता है।

गज चित्रण की कलात्मक विशेषताएँ

राजस्थानी कलाकारों ने हाथियों के चित्रण में विशेष कलात्मक तत्वों का प्रयोग किया। प्रमुख विशेषताएँ – 1. चमकीले रंगों का प्रयोग, 2. सूक्ष्म अलंकरण, 3. गतिशील रेखाएँ, 4. राजसी भव्यता, 5. प्रतीकात्मक प्रस्तुति, 6. प्राकृतिक एवं भावनात्मक चित्रण

हाथियों के शरीर पर फूल–पत्तियों, ज्यामितीय आकृतियों और पारंपरिक डिजाइनों का चित्रण राजस्थान की कलात्मक परम्परा को दर्शाता है।

आधुनिक संदर्भ में गज चित्रण

आधुनिक समय में भी राजस्थान की कला और पर्यटन में गज चित्रण का विशेष महत्व बना हुआ है। पर्यटन उद्योग में हाथी राजस्थान की पहचान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जयपुर, उदयपुर और जोधपुर जैसे शहरों में हाथी आधारित लोकचित्र, हस्तशिल्प और सजावटी वस्तुएँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। आधुनिक कलाकार पारंपरिक शैली को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़कर नए प्रयोग कर रहे हैं।

निष्कर्ष

राजस्थानी सामाजिक जीवन में गज चित्रण कला, संस्कृति और परंपरा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। हाथी शक्ति, समृद्धि, राजसी वैभव और धार्मिक आस्था का प्रतीक बनकर राजस्थान की चित्रकला और लोकजीवन में विशेष स्थान रखता है। राजस्थानी चित्रशैलियों में हाथियों का चित्रण उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन का सजीव दस्तावेज प्रस्तुत करता है। लोककला, स्थापत्य, उत्सव और सामाजिक परंपराओं में गज की उपस्थिति राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि को व्यक्त करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि गज चित्रण केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि राजस्थान की ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास , पृ. 175
2. नीरज, जयसिंह, शर्मा, भगवतीलाल, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. 221
3. नीरज, जयसिंह, राजस्थानी चित्रकला, पृ. 65
4. प्रताप, रीता भारतीय चित्रकला एवं मूतिकला का इतिहास , पृ. 163
5. भानावत, कहनी, सांझी कला, पृ. 93
6. प्रताप, रीता, भारत की लोक कला, पृ. 60

❑❑❑